लाल किताब

नाम	Sample	दादा का नाम	
लिंग	पुरुष	पिता का नाम	
जन्म तिथि	01/01/1980	माता का नाम	
दिन वार	मंगलवार	जाति	
जन्म समय	13:10:00 घन्टे	गोत्र	
जन्म समय	14: 49: 15 घटी		
(समय घटी में)			
जन्म स्थान	DELHI	विक्रमी संवत्	2036
अक्षांश	028.39 उत्तर	शक संवत्	1901
रेखांश	077.13 पूर्व	मास	पौष
स्थानीय समय	12:48:52 घन्टे	पक्ष	शुक्ल
स्थानीय तिथि	01/01/1980	चन्द्र तिथि	14
सूर्योदय	7: 14: 17 घन्टे	सूर्योदय कालीन तिथि	14
सूर्यास्त	17: 35: 21 घन्टे	तिथि समाप्ति काल	14: 30: 42 घन्टे
दिनमान	10: 21: 3 घन्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	मृगशिरा
विषुव काल	19: 29: 22 घन्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	18: 26: 1 घन्टे
भयात	47:24:10 घटी	सूर्योदय कालीन योग	शुक्ल
भभोग	60:35:10 घटी	योग समाप्ति काल	12: 43: 49 घन्टे
ऋतु	हेमन्त	सूर्योदय कालीन करण	वणिज
भोग्य दशा	मंगल 1व 6मा 5दि	करण समाप्ति काल	14: 30: 42 घन्टे

Triple-S Software
205 Allied House , Inderlok Chowk, Old Rohtak Rd., Delhi-110035, INDIA
Email:sales@horosoft.net WebSite: http://www.horosoft.net

शत्रु–मित्र सारिणी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
चन्द्र	मित्र	––	सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	––	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	सम	––	सम	मित्र	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	––	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	––	मित्र	सम
राहु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	––	मित्र
केतु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	––

ग्रह फल / राशि फल

ग्रह	वर्णन	ग्रह फल / राशि फल
सूर्य	लम्बी उम्र, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य	..
चन्द्र	उम्र का मालिक फरिश्ता जिससे मौत भी डरे	..
मंगल	जद्दी घर से बाहर रहना लावल्दी ही देना	..
बुध	कोढ़ी तथा राज एक साथ	..
गुरु	ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला	ग्रह
शुक्र	शनि उत्तम तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री)	..
शनि	लेख की स्याही एक गुणा मंदा	राशि
राहु	शरारती, संतान गर्क	..
केतु	गीदड़ स्वभाव कुत्ता	..

चन्द्र लग्न

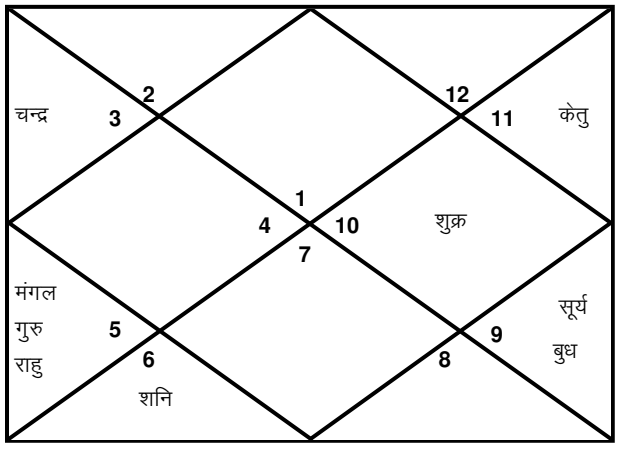

चन्द्र लग्न लाल किताब

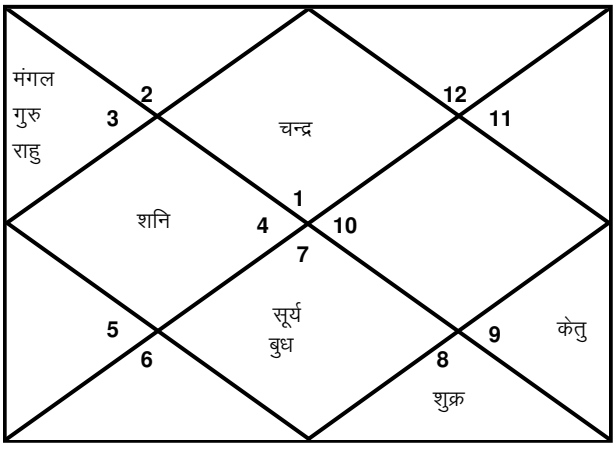

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	01/01/1980 - 01/01/1982	केतु	01/01/1986 - 01/01/1988	शुक्र	01/01/1992 - 01/01/1993
गुरु	01/01/1982 - 01/01/1984	बुध	01/01/1988 - 01/01/1990	मंगल	01/01/1993 - 01/01/1994
शुक्र	01/01/1984 - 01/01/1986	मंगल	01/01/1990 - 01/01/1992	बुध	01/01/1994 - 01/01/1995

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	01/01/1995 - 01/01/1997	शनि	01/01/2001 - 01/09/2001	सूर्य	01/01/2003 - 01/05/2003
सूर्य	01/01/1997 - 01/01/1999	राहु	01/09/2001 - 01/05/2002	शनि	01/05/2003 - 01/09/2003
शनि	01/01/1999 - 01/01/2001	केतु	01/05/2002 - 01/01/2003	राहु	01/09/2003 - 01/01/2004

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	01/01/2004 - 01/01/2005	केतु	01/01/2007 - 01/01/2009	राहु	01/01/2013 - 01/09/2013
चन्द्र	01/01/2005 - 01/01/2006	शुक्र	01/01/2009 - 01/01/2011	केतु	01/09/2013 - 01/05/2014
गुरु	01/01/2006 - 01/01/2007	चन्द्र	01/01/2011 - 01/01/2013	सूर्य	01/05/2014 - 01/01/2015

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	01/01/2015 - 01/01/2017	केतु	01/01/2021 - 01/01/2023	शुक्र	01/01/2027 - 01/01/2028
गुरु	01/01/2017 - 01/01/2019	बुध	01/01/2023 - 01/01/2025	मंगल	01/01/2028 - 01/01/2029
शुक्र	01/01/2019 - 01/01/2021	मंगल	01/01/2025 - 01/01/2027	बुध	01/01/2029 - 01/01/2030

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	01/01/2030 - 01/01/2032	शनि	01/01/2036 - 01/09/2036	सूर्य	01/01/2038 - 01/05/2038
सूर्य	01/01/2032 - 01/01/2034	राहु	01/09/2036 - 01/05/2037	शनि	01/05/2038 - 01/09/2038
शनि	01/01/2034 - 01/01/2036	केतु	01/05/2037 - 01/01/2038	राहु	01/09/2038 - 01/01/2039

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	01/01/2039 - 01/01/2040	केतु	01/01/2042 - 01/01/2044	राहु	01/01/2048 - 01/09/2048
चन्द्र	01/01/2040 - 01/01/2041	शुक्र	01/01/2044 - 01/01/2046	केतु	01/09/2048 - 01/05/2049
गुरु	01/01/2041 - 01/01/2042	चन्द्र	01/01/2046 - 01/01/2048	सूर्य	01/05/2049 - 01/01/2050

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	01/01/2050 - 01/01/2052	केतु	01/01/2056 - 01/01/2058	शुक्र	01/01/2062 - 01/01/2063
गुरु	01/01/2052 - 01/01/2054	बुध	01/01/2058 - 01/01/2060	मंगल	01/01/2063 - 01/01/2064
शुक्र	01/01/2054 - 01/01/2056	मंगल	01/01/2060 - 01/01/2062	बुध	01/01/2064 - 01/01/2065

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	01/01/2065 - 01/01/2067	शनि	01/01/2071 - 01/09/2071	सूर्य	01/01/2073 - 01/05/2073
सूर्य	01/01/2067 - 01/01/2069	राहु	01/09/2071 - 01/05/2072	शनि	01/05/2073 - 01/09/2073
शनि	01/01/2069 - 01/01/2071	केतु	01/05/2072 - 01/01/2073	राहु	01/09/2073 - 01/01/2074

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	01/01/2074 - 01/01/2075	केतु	01/01/2077 - 01/01/2079	राहु	01/01/2083 - 01/09/2083
चन्द्र	01/01/2075 - 01/01/2076	शुक्र	01/01/2079 - 01/01/2081	केतु	01/09/2083 - 01/05/2084
गुरु	01/01/2076 - 01/01/2077	चन्द्र	01/01/2081 - 01/01/2083	सूर्य	01/05/2084 - 01/01/2085

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	01/01/2085 - 01/01/2087	केतु	01/01/2091 - 01/01/2093	शुक्र	01/01/2097 - 01/01/2098
गुरु	01/01/2087 - 01/01/2089	बुध	01/01/2093 - 01/01/2095	मंगल	01/01/2098 - 01/01/2099
शुक्र	01/01/2089 - 01/01/2091	मंगल	01/01/2095 - 01/01/2097	बुध	01/01/2099 - 01/01/2100

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	01/01/2100 - 01/01/2102	शनि	01/01/2106 - 01/09/2106	सूर्य	01/01/2108 - 01/05/2108
सूर्य	01/01/2102 - 01/01/2104	राहु	01/09/2106 - 01/05/2107	शनि	01/05/2108 - 01/09/2108
शनि	01/01/2104 - 01/01/2106	केतु	01/05/2107 - 01/01/2108	राहु	01/09/2108 - 01/01/2109

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	01/01/2109 - 01/01/2110	केतु	01/01/2112 - 01/01/2114	राहु	01/01/2118 - 01/09/2118
चन्द्र	01/01/2110 - 01/01/2111	शुक्र	01/01/2114 - 01/01/2116	केतु	01/09/2118 - 01/05/2119
गुरु	01/01/2111 - 01/01/2112	चन्द्र	01/01/2116 - 01/01/2118	सूर्य	01/05/2119 - 01/01/2120

Sample

धर्मी टेवा

लाल किताब में कुछ कुन्डली धर्मी टेवा से प्रभावित होती है । लाल किताब के अनुसार राहु, केतु एवं शनि अशुभ ग्रह माने जाते है । मंगल का प्रभाव यदि अशुभ हो तो यह ग्रह भी अशुभ माना जाता है । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है ।
यदि टेवा में बृहस्पति, शनि के साथ किसी भी घर में स्थित हो या फिर शनि 11वें घर में हो, तो वह धर्मी टेवा कहलाता है । यदि बृहस्पति के साथ शनि हो तो वह कई कष्टों का निवारक होता है एवं जीवन को नियंत्रित कर देता है । खास तौर पर 6ठे, 9वें, 11वें या फिर 12वें घरों में बृहस्पति–शनि का सेंयोग बहुत फलदायक होता है । यदि किसी टेवा में राहु या केतु में से कोई ग्रह 4थे घर में स्थित हो तो भी वह धर्मी टेवा कहलाता है । टेवा में चंद्र का सेंयोग राहु या फिर केतु के साथ किसी भी घर में हाने पर भी वह धर्मी टेवा हो जाता है ।
धर्मी टेवा वाले जातक को परेशानियों के समय ईश्वर की सहायता एवं कृपा प्राप्त हाती है । शनि जो कि भागय एवं मुश्किलों का कारक होता है, बृहस्पति के सेंयोग से जातक के जीवन में शुभ फल प्रदान करता है । वैसे ही राहु अथवा केतु जो कि अशुभ ग्रह माने जाते है, यदि 4थे घर में स्थित हो या फिर चंद्र के साथ किसी भी घर में हो, तो वह जातक को कोई हानि नहीं पहुंचाते । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों कि अशुभता तथा सारी समस्याओं का अंत हो जाता है ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में धर्मी टेवा नहीं हैं ।

रतांध ग्रह / अर्द्ध–अंधे ग्रह

लाल किताब के अनुसार कुछ कुन्डली में ग्रहों की स्तिथी अनुकूल होने पर भी वह शुभ फल प्रदान नहीं करते । इस प्रकार का टेवा व्यावसायिक जीवन, मन की शांति एवं ग्रहस्थ जीवन के लिए अशुभ सिद्ध होते है । इस प्रकार के टेवे (रतांध ग्रह) उस इन्सान कि तरह होते है जो दिन में देख सकते है परंतु रात्रि में अंधे हो जाते हैं ।
यदि टेवा में 4थे घर में सूर्य और 7वें घर में शनि स्थित हो तो वह अर्द्ध–अंधा टेवा कहलाता है । एसी स्थिती में शनि अपनी दसवीं पूर्ण दृष्टि से सूर्य को प्रभावित करता है । शनि की दृष्टि सूर्य पर पड़ने से सूर्य के शुभता, अशुभता में बदल जाती है क्यों कि शनि, 7वें घर में होने से बहुत शक्तिशाली हो जाता है । शनि कि स्थिती से नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भाव (जो कि भाग्य, स्वास्थ्य तथा सुख के स्थान है) भी प्रभावित होते हैं और उनके शुभ फल अशुभता में

परिणत हो जाते है ।
अतः एसी स्थिती में सूर्य के उपायों कि कोई मान्यता नहीं है । शनि के अशुभ फलों को नष्ट करने के लिए, जातक को मात्र शनि के उपायों का ही पालन करना चाहिए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में रतांध ग्रह / अर्द्ध–अंधे ग्रह से प्रभावित नहीं हैं ।

अंधा ग्रह

कुन्डली में दशम भाव का बहुत महत्व होता है क्यों कि यह भाव कर्म से सम्बन्धित होता है । शारीरिक तौर पर यह भाव हड्डीयाँ, पीठ तथा घुटनो के जोड़ से सम्बन्धित है । इस भाव से ओहदा, कीर्ति, उद्योग, व्यापार, बड़ी पदवी की प्राप्ति, अधिकार, नौकरी, राज्य, सत्ता, ऐश्वर्य–भोग एवं प्रतिष्ठा का विचार किया जाता है ।
इस से सम्बन्धित रोग एंव विकार चर्म रोग तथा घुटनो का दर्द है । यदि टेवा में, 10वें घर में कोई भी ग्रह न हो अर्थात खाली हो या फिर 10वें घर में शत्रु ग्रह स्थित हो तो वह अंधा टेवा कहलाता है ।
उदाहरण के तौर पर चंद्र–केतु, शनि–सूर्य, सूर्य–राहु आदि शत्रु ग्रह हैं । इस तरह के ग्रह 10वें भाव में होने से, अपना प्रभाव दूसरे ग्रहों कि शुभता पर ड़ालते है और वह अशुभ फल में परिणत हो जाते हैं ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में अंधा ग्रह से प्रभावित नहीं हैं ।

नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार चंद कुन्डली कुछ हालतो में बारह साल की उम्र तक नाबालिक टेवे होते है । इस तरह कि कुन्डली वाले जातक की किस्मत 12 साल तक शक्की होती है । एसे बालक के जीवन पर 12 साल तक, कुन्डली का नहीं बलकि उसके पिछले जन्म के भाग्य के असर का प्रभाव रहता है । इस तरह कि कुन्डली के ग्रहों का प्रभाव उस नाबालिक के समान होता है, जो अपने परिवार के बड़ों पर निर्भर हैं और अपने बल पर ज्यादा कुछ हासिल नहीं कर सकता । वैसे ही नाबालिग टेवा में ग्रहों की स्तिथी अनुकूल होने पर भी वह अपना पूर्ण शुभ फल प्रदान नहीं कर पाते ।

यदि टेवा में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव (केंद्र स्थान) में कोई भी ग्रह न हो अर्थात खाली हो अथवा उनमें सिर्फ पापी ग्रह (शनि, राहु या केतु) हो, या फिर इनमें से किसी स्थानो में अकेला बुध स्थित हो, तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा कहलाता है । लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक के जीवन पर हरेक ग्रह का प्रभाव, प्रत्येक वर्ष, 12 साल की आयु तक निम्नलिखित अनुसार पड़ता है ।
जातक को अपने जीवन पर इन ग्रहों से पड़ने वाले अशुभ फलों को शुभ फल में परिणत करने के लिए प्रत्येक वर्ष, उन ग्रहों का उपाय करना चाहिए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में नाबालिग ग्रहों से प्रभावित नहीं हैं ।

जातक की आयु	प्रभाव ड़ालने वाला घर
1	सांतवें घर के ग्रह
2	चौथे घर के ग्रह
3	नौवें घर के ग्रह
4	दसवें घर के ग्रह
5	ग्यारहवें घर के ग्रह
6	तीसरे घर के ग्रह
7	दूसरे घर के ग्रह
8	पांचवें घर के ग्रह
9	छठे घर के ग्रह
10	बारहवें घर के ग्रह
11	पहले घर के ग्रह
12	आठवें घर के ग्रह

पैतृक ऋणभार एवं उपाय

कुन्डली में कुछ ग्रहों की स्तिथी अनुकूल न होने के कारण जातक अपने जीवन में कई प्रकार से ऋणी हो जाता है । इस स्तिथी में जातक के विकास पर भी असर होता है क्यों कि उन दुषित ग्रहों के प्रभाव से शुभ ग्रह भी अपना अनुकूल फल देना बंद कर देते है । इसलिए इस तरह कि कुन्डली वाले जातको को चाहिए कि वह इन ऋण भार से अपने आप को मुक्त करें ताकि ग्रहों के शुभ फल पा सके एवं अपना शेष जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सके । नीचे ऋणो के कई प्रकार एवं उनके लक्षण दिए गए हैं जिससे जातक के जीवन पर असर पड़ सकता है । साथ में एसी स्थिती के हाने पर उनके उपाय भी दिए गए हैं ।

पितृ ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में शुक्र, बुध या फिर राहु, इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे, पांचवे, नौंवे या बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है ।

पाप का कारणः– घर के पास बने मंदिर को तोड़ देना । पीपल का पेड़ काटना या फिर खानदान के कुल पुरोहित को बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना ।

उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का सम्बंध है (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन–बेटी, बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर का हिस्सा लेकर के उसी दिन मंदिर में दान कर देना ।
2. पीपल के पेड़ पर 43 दिन लगातार जल चडाए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में पितृ ऋण का दोष नहीं हैं ।

स्वदोष ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में शुक्र, शनि, राहु या फिर केतु पांचवे खाने में स्थित हो तो जातक पर स्वदोष ऋण होता है ।

पाप का कारणः– कुल के पुराने रस्मों–रिवाजों का पालन न करना या नास्तिक होना ।

उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का प्रभाव हो सबका बराबर का हिस्सा लेकर के सूर्य या विश्नू यज्ञ करना या हवन करना ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में स्वदोष ऋण का दोष हैं । ऋण मुक्ति के लिए कृप्या ऊपर दिए उपाय का पालन करें ।

मातृ ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में केतु चौथे खाने में स्थित हो तो जातक पर मातृ ऋण होता है ।

पाप का कारणः– अपनी संतान पैदा होने के बाद माता को दरबदर जुदा करना, दुर्व्यवहार करना या दुःखी करना या उनका खुद ही दुःखी हो जाने पर लापरवाही करना, उनके सुख–दुःख का ख्याल नही खरना ।

उपाय

1. चाँदी का सिक्का लेकर उसे दरिया या बहते पानी में बहाया जाए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में मातृ ऋण का दोष नहीं हैं ।

भ्रातृ/पारिवारिक ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में बुध अथवा शुक्र प्रथम अथवा अष्टम खाने में स्थित हो तो जातक पर भ्रातृ/पारिवारिक ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी के पके हुए खेत को आग लगा देना या किसी का मकान बनने पर आग लगा देना । भाईयों या रिश्तेदारों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन एवं

पारिवारिक त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना ।

उपाय

1. किसी खेराती संस्था को दवाईयाँ दान करें ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में भ्रातृ/पारिवारिक ऋण का दोष नहीं हैं ।

स्त्री ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, चंद्र या फिर राहु इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे अथवा सातवें खाने में स्थित हो तो जातक पर स्त्री ऋण होता है ।

पाप का कारणः– अपनी पत्नी या कुल की किसी स्त्री का किसी लालच या सम्बंध के कारण मार देना या किसी स्त्री को बच्चे जनने की हालत में किसी लालच के कारण जान से मार देना ।

उपाय

1. 100 गायों को एक ही दिन में चारा खिलाएँ ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में स्त्री ऋण का दोष नहीं हैं ।

कन्या/बहन ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में चंद्र तीसरे अथवा छठे खाने में स्थित हो तो जातक पर कन्या/बहन का ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी की लड़की या बहन की हत्या करना या हद से ज्यादा जुल्म करना । बहन का ख्याल न रखना या किसी लड़की को धोखा देना ।

उपाय

1. पीले रंग की कौड़ियां खरीद कर एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में कन्या/बहन ऋण का दोष हैं । ऋण मुक्ति के लिए कृप्या ऊपर दिए उपाय का पालन करें ।

क्रूर/जालिमाना ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, चंद्र या फिर मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह दशम अथवा ग्यारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर क्रूर/जालिमाना ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी का मकान अथवा जमीन धोखेसे ले लेना, उसकी कीमत किसी तरह भी अदा न करना ।

उपाय

1. 100 मजदूरों को अथवा अलग–अलग जगह की 100 मछलियों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में क्रूर/जालिमाना ऋण का दोष नहीं हैं ।

अजन्म/पैदा न हुए का ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, शुक्र अथवा मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर आजन्मकृत ऋण होता है ।

पाप का कारणः– ससुराल से धोखा या आपसी रिश्तेदारी में धोखा फरेब की घटनाएँ, ऐसे ढंग से कि दूसरों का कुल ही तबाह हो गया हो ।

उपाय

1. एक नारियल लेकर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में अजन्म/पैदा न हुए का ऋण का दोष नहीं हैं ।

प्रकृती ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में चंद्र या फिर मंगल छठे खाने में स्थित हो तो जातक पर प्रकृती/कुदरती ऋण होता है ।

पाप का कारणः– कुत्तों को मारना या मरवाना, बदचलनी या अपने भतीजे से धोखा करना, ऐसे ढंग से कि हद से अधिक तबाही हो जाए ।

उपाय

1. 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।
2. किसी विदवाह की सेवा करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करें ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में प्रकृती ऋण का दोष नहीं हैं ।

सूर्य ग्रह का प्रभाव

नवें भाव का सूर्य बड़े परिवार का सूचक होता है तथा इस घर के सूर्य से भाग्य में चढ़ाव आता है एवं सरकार की तरफ से इज्जत–मान प्राप्त होता है । ध्यान रखें की आपका स्वभाव न तो बहुत उग्र हो और न ही बहुत नम्र हो । आपके माता–पिता को सरकार से लाभ मिलेगा ।

उपाय

1. ताँबे के बर्तन में खाना–खाने से आपका भाग्य बढ़ेगा।
2. किसी से भी मुफ्त में दूध, चावल, चांदी न लें।
3. कोशिश करें कि आपका स्वभाव एक समान रहें।

चन्द्र ग्रह का प्रभाव

जन्म पत्रिका के तीसरे खाने में चंद्रमा की स्थिति यह प्रदर्शित करती है कि आप मधुर भाषी, परिश्रमी एवं भातृ–सुख से पूर्ण रहेंगे । महिलाओं की आप खूब आवभगत करेंगे । आयु का हर तीसरा महीना एवं तीसरा साल आपके लिए लाभ दायक होगा । शत्रुओं का सामना करने की आप के अंदर क्षमता है । घर की स्त्रियों की इज्जत होने से आपका भाग्योदय होगा । आपकी दिमागी शक्ति अच्छी है और माता का सुख आपको पूर्ण मिलेगा ।

उपाय

1. कन्याओं के विवाह पर यथाशक्ति दान दें।
2. धन को बढ़ाने के लिए लड़की के जन्म दिन पर दूध और चावल बाँटें।
3. बुरी नजर से बचने के लिए पुत्र के जन्म दिवस पर गुड़ एवं गेंहू का दान करें।

मंगल ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में पाँचवें भाव में मंगल होने से आप शांत स्वभाव के हैं । आपको अपने

जन्म स्थान से दूर निवास करना पड़ेगा । आपकी संतान भी धनवान् होगी । आयु बढ़ने के साथ – साथ आपकी सम्पदा भी बढ़ती जाएगी । पैरों के कष्ट से आप पीड़ित हो सकते हैं । आपका भाग्योदय पुत्र के जन्म के पश्चात् ही होगा ।

उपाय

1. नीम का पेड़ लगाने से एवं उसकी सेवा करने से आपका सुख बढ़ेगा।
2. अच्छा चाल–चलन रखने से समृद्धि की वृद्धि होगी।
3. रात को पानी का गिलास अपने सिरहाने रखकर सोइए और सुबह उस पानी को किसी पेड़ या पौधे पर डालिए।

बुध ग्रह का प्रभाव

नौवें भाव में बुध रहने से भाग्य में रूकावटें आती हैं । परिवार का पालन करने के लिए आपको ऐसे कार्य करने पड़ेंगे जो आपके स्तर से निम्न होंगे । आपका भाग्योदय काफी समय के बाद होगा । परेशानियाँ आने पर आपका मन सन्यास लेने को करेगा परंतु यह आपके लिए उचित नहीं होगा । जीवन में विदेश यात्रा से उचित लाभ नहीं होने की सम्भावना नहीं रहेगी ।

उपाय

1. हरे रंग का प्रयोग न करें।
2. किसी साधु एवं फकीर से ताबीज मंत्र आदि न लें।
3. घर में तोता न पालें।

गुरु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में बृहस्पति ग्रह पाँचवें घर में होने से अच्छा फल देगा क्योंकि यह गुरु का पक्का घर है । आप ऐश्वर्यशाली होंगे एवं अपने सौभाग्य से जीवन में खूब उन्नति करेंगे । 16 वें वर्ष से आपका भाग्य साथ देने लगेगा । संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे ।

आप बुद्धिमान हैं तथा अनेक विद्याओं में प्रवीण हो सकते हैं । राजपक्ष के बड़े अधिकारियों से शत्रुता न रखें । मांसाहार एवं आलस्य का त्याग करें, जिससे आपके जीवन में अच्छी उन्नति होगी ।

उपाय

1. किसी से कोई भी वस्तु मुफ्त न लें।
2. धार्मिक स्थलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर सेवा करें।
3. विशेषतया गणपति देवता की पूजा अर्चना करते रहें।

शुक्र ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र दसवें घर में होने से आप लालची एवं शक्की प्रवृत्ति के हो सकते हैं । आप बलिष्ठ हैं तथा अपने जीवन–साथी का बहुत मान करते हैं । बागवानी इत्यादि का शौक रहेगा तथा किसी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटनाएँ आदि होने की सम्भावना नहीं रहेगी । संतान पक्ष के सुख में सामान्य बाधा हो सकती है । औरतें आपको पसंद करती हैं । जीवन–साथी का स्वास्थ्य एवं सुख अच्छा रहेगा । काम–कला में आप प्रवीण होंगे ।

उपाय

1. मांसाहार तथा शराब पीना आपके लिए हानिकारक सिद्ध होगा।
2. पराई स्त्रियों के प्रति पवित्र भावना रखें।
3. नेत्रहीन कन्याओं को भोजन करायें।
4. शनि ग्रह का उपाय करें।

शनि ग्रह का प्रभाव

शनि ग्रह छठे भाव में होने से 28 वर्ष की उम्र तक आपकी पत्नी एवं संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा इसके पश्चात् ही आपको दामपत्य सुख का उत्तम लाभ मिलेगा । आप 36 से 42 वर्ष के भीतर मकान बनवा सकते हैं । आपको भाइयों की ओर से सामान्य सहयोग

रहेगा । आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा परंतु मुकदमा आदि सरकारी परेशानियाँ हो सकती हैं अतः सावधानी बर्तें ।

उपाय

1. मांस, शराब, अण्डे का व्यवसाय न करें।
2. औरतों के चक्कर में न पड़े एवं शराब न पीएं।
3. अपनी महत्वपूर्ण योजनाएं रात्रि में बनाएं तथा कृष्ण पक्ष के समय दिन में भी बना सकते हैं।

राहु ग्रह का प्रभाव

खाना नं. पाँच में राहु की स्थिति यह दर्शाती है कि आपका मन चंचलता से युक्त होगा । अनावश्यक कार्यों में आप अपना समय व्यर्थ व्यतीत करेंगे । अध्ययन में आपकी कम रुचि रहेगी एवं बाधाएँ भी आ सकती हैं । संतान सुख भी विलम्ब से हो सकता है । जीवन में आगे चलकर आपके मन में धार्मिक ज्ञान का उदय होगा । माताजी के लिए अच्छा असर रहेगा । आपको धन का सुख मिलेगा । स्वास्थ्य कमजोर पड़ सकता है एवं नेत्रों में परेशानी हो सकती है । आपके स्वभाव में स्थिरता कम रहेगी ।

उपाय

1. अपनी पत्नी के अलावा दूसरी औरतों से नाजायज सम्बन्ध न रखें।
2. चांदी के हाथी की प्रतिमा घर में रखें।
3. लापरवाही से परहेज करें।
4. दो से अधिक विवाह न करें।

केतु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली के ग्यारहवें खाने में केतु होने से आप धन, वैभव से युक्त रहेंगे । जीवन में आप अपने आय स्रोत से अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे । उदर सम्बन्धी परेशानी हो

सकती है । संतान पक्ष से कुछ परेशानी रहेगी तथा नेत्रों में विकार होने की आशंका रहेगी । सरकारी कार्यों से आपको लाभ रहेगा । आप अपनी मेहनत से उत्तम मान–सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा आदि को प्राप्त करेंगे ।

उपाय

1. बन्दरों को गुड़ खिलाएँ।
2. बृहस्पति का उपाय करें।
3. गणपति का पूजन करें।
4. अपना चाल–चलन उत्तम रखें।

Sample

वर्ष 2009 - 2010 लाल किताब वर्ष कुण्डली

जन्म लग्न

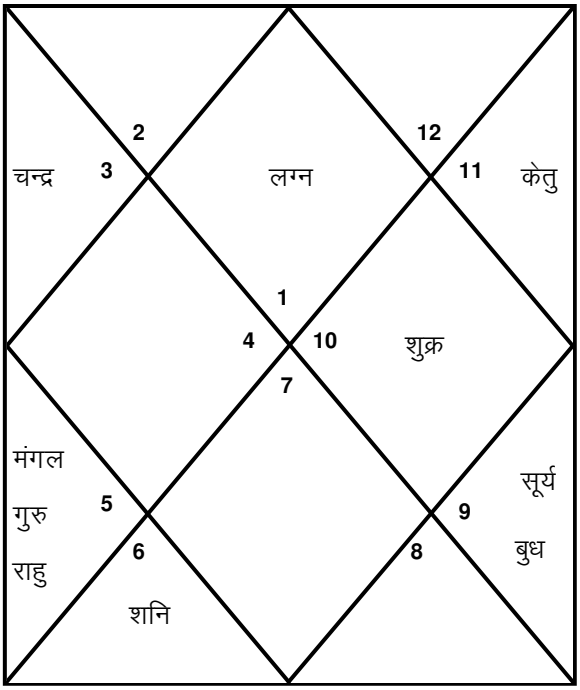

लाल किताब कुण्डली

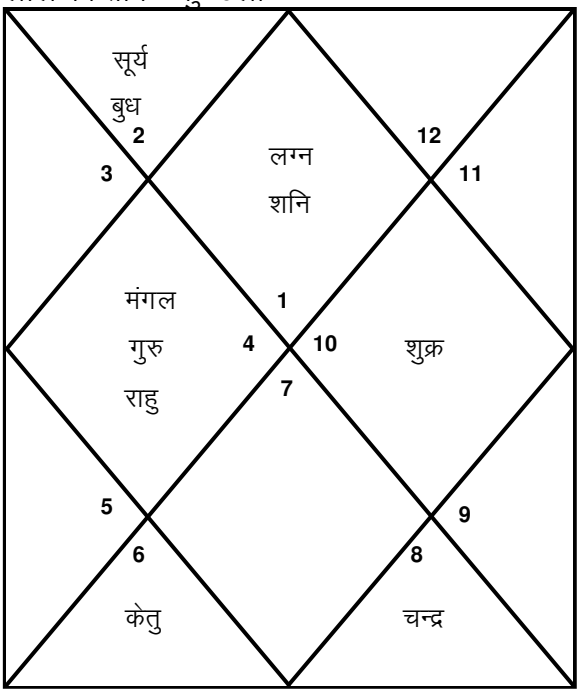

लाल किताब उपाय

ग्रह	उपाय
सूर्य	किसी से भी सफेद रंग की वस्तुएँ जैसे दूध, चावल, चाँदी, सफेद कपड़े इत्यादि मुफ्त न लें ।
चन्द्र	बुजुर्गों के नाम पर दूध का दान करें । श्राद्ध करें ।
मंगल	43 दिन लगातार बरगद की जड़ पर बिना उबला कच्चा दूध डालें ।
बुध	आर्थिक समस्याएँ हल करने के लिए मंदिर में दूध व चावल दान करते रहें ।
गुरु	शरीर पर कपड़े धारण करें, नहाते समय भी किसी को अपना नंगा बदन न दिखाएं । पीपल का वृक्ष लगाएँ या लगे हुए पीपल पर जल चढ़ाया करें ।
शुक्र	मांस–मदिरा और मछली का सेवन न करें ।
शनि	बंदरों को गुड़ चना दें ।
राहु	किसी पवित्र नदी में स्नान करें ।
केतु	बाएं हाथ की अनामिका में शुद्ध सोने का छल्ला पहनें ।